24,726
96-V-60

4

R
78
CHA-A

ASG

ऋषि दयानन्द पुस्तकालय
पुस्तक सं. ८.१/२.४
आगत सं. १२६.....
तिथि २६.८.१९७१
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी.

1973
Initial

# अमीरस सार

ऋषि दयानन्द पुस्तकालय
पुस्तक सं. ७८.....
आगत सं. ६६.....
तिथि ३५.१३.७.
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी.

सम्पादक—
चमूपति
'आर्य सेवक'

R78,CHA-A
35137
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

# भजनों की वर्णानुक्रमणिका

## हिन्दी भजन


| | भ० सं० | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १ आज मिल सब | २ | ९ |
| २ इस नगरी के ... | २६ | २७ |
| ३ उठ री बाले ... | २१ | २४ |
| ४ उदय हुआ फिर | २० | २२ |
| ५ ओ३म् अकार ... | १ | ८ |
| ६ कर उपासना ... | ३ | १२ |
| ७ करूं आप के ... | १५ | १९ |
| ८ कौन करे चित ... | ४ | १० |
| ९ क्यों पड़ी है ... | १८ | २१ |
| १० क्यों शोकातुर | २४ | २६ |
| ११ जप जप प्रभु ... | २२ | २५ |
| १२ जप परमेश्वर ... | ५ | ११ |
| १३ जिस गाड़ी में | २८ | २९ |
| १४ जो तव कृपा ... | ३ | १० |
| १५ जो हरि गीत ... | १९ | २१ |
| १६ तुम हो प्रभो ... | ११ | १६ |
| १७ तुम्हें छोड़ किस | १२ | १६ |
| १८ तू कुछ कर ... | २७ | २८ |
| १९ दया करो प्रभु ... | १६ | १९ |
| २० देव वधू ऐसी ... | ३० | ३० |
| २१ नमस्ते पितः पूर्ण | १० | १ |
| २२ नमः सृष्टि कर्ता | ७ | १ |
| २३ नैया कैसे उतरे | ९ | १४ |
| २४ बनरा बनरी ... | २९ | ३ |
| २५ मन मतवारा ... | २५ | २७ |
| २६ मैं उनकी छवि | १७ | २० |
| २७ यह मन कब ... | २३ | २५ |
| २८ सखि ! मैं प्रिय | १३ | १७ |
| २९ सखियो प्राणनाथ | ८ | १३ |
| ३० त्राहि त्राहि ... | १४ | १८ |


## पंजाबी भजन।


| | | |
|---|---|---|
| ३१ कीकण दाज ... | ४ | ४० |
| ३२ प्रभु लै लै नाम तेरा | ३ | ३८ |
| ३३ मैं जिंद जान ... | २ | ३ |
| ३४ वतन दुराडा साडा | १ | ३ |

जन्म शताब्दी ग्रन्थमाला संख्या २.

ओ३म् ।

# अमीरस सार ।

अर्थात्

## भक्त अमीचन्द के भजनों

का

संक्षिप्त संशोधित

संस्करण ।

सम्पादक—

चमूपति एम. ए.

' आर्य सेवक '

प्रकाशक—

राजपाल -- प्रबन्धकर्ता—

आर्य पुस्तकालय, लाहौर ।

अमृत प्रेस, अमृतधारा भवन, लाहौर ।

॥ ओ३म् ॥

# कवि का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त ।

अमीचन्द का जन्मस्थान हरणपुर था, जो जेहलम ज़िले की पिंडदादनखां तहसील में एक छोटासा ग्राम है। इन का वंश "बाली" था—यह मोहयाल ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक विख्यात उपजाति है।

अमीचन्द को गायन का अनुराग बाल्यकाल से था। कदाचित इसी कारण से इन का संग मीरासियों और वेश्याओं से होगया। यह गानविद्या पर दैव का अत्याचार है कि यह विद्या दुराचारियों के हाथ जा पड़ी है। अमीचन्द गान रस का रसिया ! यही रस उसे दुराचारियों में लेगया और उस में ऐसा फंसाया कि वहीं तन्मय करदिया। मांस खाता, मद पीता, और दिन रात दुर्व्यसनियों की कुसंगति में रहता।

अपने समय के मुन्शियों की भांति अमीचन्द उर्दू पढ़ा था। जेहलम तहसील में वासिल बाक़ी नवीस होगया। बीस बाईस वर्ष की निरन्तर कर्मचारिता के पश्चात् चुंगी का दारोग़ा बना और स्थानापन्न नाइब तहसीलदार भी नियत किया जाने लगा। एक बार एक सेठ के गुमाश्ते के साथ मिल मिला कर वस्तुओं का कृत्रिम भाव लिख दिया, जिस से उस गुमाश्ते को सरकार की ओर से उचित से बहुत अधिक रुपया मिलने की संभावना थी। भेद खुल जाने से इन पर और तहसीलदार पर अभियोग चला। तहसीलदार तो बन्दीगृह भेजा गया और इन्हें त्यागपत्र देने को बाधित किया गया। गुमाश्ते ने ४०) रु० मासिक के स्थान में ६०)

रु० अपने सेठ के हां से दिलवा दिये और उधर नौकर करा दिया। इस नौकरी में अमीचन्द कलकत्ते आदि अनेक स्थानों में गया और इस प्रकार लगभग ३ वर्ष जेहलम से बाहर रहा।

जब लौटा तो अब वह अमीचन्द पुराना अमीचन्द न था। अब आर्यसमाज का सभासद हो चुका था और पुराने दुराचार सब छूट गये थे। अब तो न मांस था, न मद्यपान था, न दुराचारियों का संग था।

कहते हैं एक डाक्टर महाशय अमीचन्द को गुजरात ले-गए। वहां उसे ऋषि दयानन्द के दर्शन हुए। ऋषि के सामने अमीचन्द ने भजन गाया। ऋषि बोल उठे, 'है तो हीरा परन्तु कीचड़ में पड़ा है'। इतने ही में आंख खुल गई और जो दुर्व्यसनी अमीचन्द था, वही रागविद्या व्यसनी अमीचन्द सचमुच "अमीचन्द" होगया और जहां तहां "अमी रस" की वृष्टि करने लगा। कुछ तो ऋषि की अपनी-अथवा समाज द्वारा परंपरागत-कृपा से अमीचन्द की काया पलट गई और जो अनुराग उसे पहले विषय भोग में था वह अब ईश्वर भक्ति में होगया।

पहले ग़ज़लें लिखते थे, अब भजन लिखने लगे। गवैये थे ही। स्वर मनोहर पाया था। जिन्हों ने सुना है कहते हैं, कोकिल की सी ध्वनि थी। आप ही भजन बनाते और आप ही गाते। आर्य समाज के सत्संगों और नगर कीर्तनों की शोभा का एक भाग अमीचन्द के भजन होते। लाहौर आर्य समाज के उत्सव पर, जो प्रान्त के समाजों का केन्द्र-उत्सव होता था, प्रतिवर्ष जाते और अपने गान की धूम मचा आते।

जेहलम में अमीचन्द की ससुराल थी। अब वहीं डेरा लगा लिया। कुछ भूमि भी ले ली। दस वर्ष तक निरन्तर

आर्यसमाज के अधिकारियों में रहे । अपनी आयु के अन्तिम कई वर्ष उसी समाज के प्रधान भी रहे।

२९ जूलाई सन् १८९३ ई को अमीचन्द का देहान्त हुआ। इससे पूर्व स्वीकार पत्र लिख चुके थे, जिस से उनकी सारी दाय पहले उनकी धर्मपत्नी के, और उस देवी की भी मृत्यु के पश्चात् डी० ए० वी कालेज के अधिकार में चली जानी थी । कहते हैं कि इस स्वीकार पत्र के अनुसार कार्य नहीं किया गया।

अमीचन्द के जीवन काल में अभी आर्यसमाज के दो भाग न हुए थे और कालेज सारे समाज की साझी संस्था थी। अतः कालेज को दाय दान दे देने से उनका किसी पार्टी विशेष से सम्बन्ध सिद्ध नहीं होता।

## अमीचन्द के भजन

अमीचन्द के भजन भक्ति का भंडार हैं । शब्द-योजना सुन्दर और रसीली है। आश्चर्य होता है कि उस समय विना संस्कृत ज्ञान के इन्हें ऐसी सरस आर्य भाषा कैसे आई।

अमीचन्द की शब्द-योजना कविवर सूरदास की सी है, यद्यपि भाषा पर वह अधिकार नहीं । छन्दो भंग स्थान स्थान पर हुआ है। इस में अमीचन्द कबीर और नानक के नामसे कविता करने वाले कवियों से मिलते जुलते हैं । उर्दू कविता में जो दीर्घ स्वरों को ह्रस्व और ह्रस्वों को दीर्घ कर लेने की खुली आज्ञा है, अमीचन्द ने उस आज्ञा का पूरा उपयोग आर्य भाषा में किया है। तो भी कबीर की भान्ति इन्हें कवि मानना ही होगा। भला जिस की उक्ति हो—

गूंगेकी रसनाके सदृश अमीचँद
कैसे बताए कि क्या रस उड़ाया।

उसे कैसे कवि न कहें ? इस पद्य के पूर्वार्ध में छन्दोभंग है परन्तु कविता में तो भाव ही प्रधान रहता है। छन्दोभंग को मिटाने के लिये हमने इस पद्य की रचना को यों बदला है:—

रसरक्त ज्यौं मुग्ध गूँगा अमीचँद
कैसे बताए कि क्या रस उड़ाया।

ऐसा ही संशोधन हमने और भजनों का भी किया है। इस संग्रह में केवल वही भजन लिये गए हैं जो थोड़े से परिवर्तन से—या उस के बिना ही—छन्दोदोष से रहित हो सकते थे।

कहीं कहीं अमीचन्द ने आर्य भाषा के अज्ञान के कारण आर्य भाषा के शब्दों के स्थान में पंजाबी शब्द जड़े हैं। जैसे 'विछड़ना' क्रिया से 'विछोड़ा' पद बना लिया है। आर्य भाषा में यह शब्द 'विछोह' है। हमने इसे 'विछोहा' कर दिया है। भजन में तुकान्त 'रा' होने से प्रास की हानि होगई है, जैसे 'मोरा' को 'मेरा' करने से भी हुई है, परन्तु यह प्रास का स्खलन भाषा के बड़े २ कवियों में भी पाया जाता है। और हमारे लिये इस से छुटकारे का रास्ता ही न था। रसिक गण क्षमा करें।

हमने अमीचन्द के भावों की पूरी रक्षा की है और जहां तक संभव था, भाषा भी वही रहने दी है। न व्यर्थ बनाने और न बिगाड़ने की चेष्टा की है। कविता के मर्मज्ञों को संशोधित भजनों में अमीचन्द की अपनी ही ध्वनि सुनाई देगी—सपादक या संशोधक की नहीं।

हम यह भी जानते हैं कि जो भजन एक बार एक रूप में जिह्वा पर चढ़ जाए, उस में अभ्यास मात्र से ही एक रस अनुभव होने लगता है। परिवर्तित रूप में वह आनन्द भान नहीं होता। परन्तु नए रूप के थोड़े से अभ्यास से यह भ्रान्ति मिट जाती है। हमने संशोधित भजनों में 'अमी रस' वैसे का वैसा सुरक्षित रखने का यत्न किया है।

अमीचन्द के भजन आर्यसमाज की तो स्थिर संपत्ति हैं ही। हमारी इच्छा थी कि यह आर्य भाषा के शुद्ध संगीत साहित्य का भी स्थिर भाग हों। यह यत्न इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये किया गया है।

अमीचन्द में पश्चात्ताप और आत्मापमान की मात्रा अधिक है। यही बात नानक, कबीर, तुलसी, सूर, सब भक्तों में पाई जाती है। यही नहीं, फ्रांसिस आदि यूरोपियन भक्त भी अपने आप को सदैव पाप-ताप का पुतला मानते थे। परन्तु हम तो श्रीकृष्ण के इस वाक्य पर विश्वास रखते हैं:—

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मनमवसादयेत्।

हमारे संग्रह में इस आत्मावमान की उक्तियां कम आई हैं। अमीचन्द की हत्या का भय न होता तो और भी परिवर्तन कर देते।

प्रत्येक भजन के ऊपर भ० अमीचन्द ने राग और ताल दे रखे थे। भक्त मंघूराम जी ने जहां कहीं इसमें भी संशोधन आवश्यक समझा है, कर दिया है। इस के लिये हम भक्तजी के कृतज्ञ हैं। गायक लोग आवश्यकतानुसार इन भजनों को और रागों में

भी गा सक्ते हैं, परन्तु इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि जिन भजनों के प्रकृत में जिस समय के विषयों का वर्णन हो, वह उसी समय के रागों में गाए जाएं। कहीं 'भोर भई'—इस विचार से कि यह पद-कल्याण में भी गाया जा सक्ता है-सायंकाल को न गा दिया जाए।

यदि हमारे इस परिश्रम का उचित मान हुआ तो हम केवल कृष्ण आदि कवियों की कविताओं का सार भी जनता की भेंट करेंगे।

चमूपति

---

( १ )

राग तैलंग—ताल ३ ।

ओ३म् अकार उकार मकार ।
है त्रिमात्र[१] अक्षर ओंकार ॥
परमेश्वर का उत्तम नाम ।
जप रे मन ! इसको अविराम[२] ॥
अर्थ विचार करें जो जाप ।
क्यों न मिटें उनके सब ताप ॥
**भूः** प्राण का भी है प्राण ।
**भुवः** करे दुख से परित्राण[३] ॥
**स्वः** सुख-रूप सच्चिदानन्द ।
शुभ दाता सुख संपत्-कन्द ॥
**तत्** वह **सविता** सिरजनहार ।
रवि शशि जिस के आविष्कार ॥
**वरेण्य** वह वरने के योग्य ।
सदा स्मरण करने के योग्य ॥
देव ज्योतिमय ज्ञान-स्वरूप ।
**धीमहि** ध्याएं उसका रूप ॥

---

१—तीन मात्रा का । २—निरन्तर । ३—बचाव ।

धियः बुद्धि सब की यक साथ।
प्रचोदयात् प्रेरिए नाथ ! ॥
अमी चन्द ! सन्ध्या दो काल ।
कर नित, शास्त्र नियम को पाल ॥

( २

तोडी—ताल रूपक ।

आज मिल सब उस पिता के गायँ सस्वर[१] धन्यवाद ।
गारहे जिसका सदा गन्धर्व[२] गुणिवर धन्यवाद ॥
मन्दिरों में कन्दराओं[३] में वनों की बाट में ।
हैं निरन्तर गा रहे रसरक्त[४] मुनिवर धन्यवाद ॥
कूप में तालाब में गहरी नदी की धार में ।
कर रहे हैं प्रेमरस से तृप्त जलचर धन्यवाद ॥
शादियों में उत्सवों में यज्ञ में त्यौहार में ।
चाहिए नर नारियां सब गायँ सस्वर धन्यवाद ॥
गान कर सुखकन्द[५] भजनानन्द, कर प्रभु प्रेम-पान ।
हो मगन श्रोता सुनें सब कान धर धर धन्यवाद ॥

---

१. स्वर सहित । २. गायक । ३. गुफाओं । ४. रस में रंगे हुए । ५—सुख का मूल ।

( ३ )

देशी–झप ।

जो तव कृपा से रसास्वाद पाया ।
सो जीभ से जाय क्योंकर बताया ॥
रसना[१] चखे छः रसों में अगर हो ।
हो रूप तो कह सकें दृष्टि आया ॥
हो गन्धयुत तो उसे घ्राण[२] सूंघे ।
हो स्पर्श, जाए त्वचा से छुवाया ॥
संख्या करें एक से जो अधिक हो ।
दिक्काल[३] रहता उसी में समाया ॥
रसरक्त[४] ज्यों मुग्ध गूंगा अमीचँद ।
कैसे बताये कि क्या रस उड़ाया ॥

( ४ )

धनासरी–ताल रूपक ।

कौन करे चित धीर ।
तुम विन हे जगदीश ॥ टेक ॥
घूमा धाम[५] लाख चौरासी ।
अब है हृदय अधीर ॥
कबतक कुटिल क्रूर अज्ञानी ।

१–जिह्वा । २–सूंघने की शक्ति । ३–दिशा और काल । ४–रस में रंगा हुआ । ५· योनियां ।

दुर्गुण भरा शरीर ॥
गाय गाय तव यश सब सुधरे ।
तुलसी, सूर, कबीर ।
इसी हेतु तव नाम मनोहर ।
रटता दास अमीर १ ॥

( ५ )

राग भैरव—ताल रूपक ।

जप परमेश्वर का मधुर नाम ॥ टेक ॥
कल कल, पल पल, क्षण क्षण ।
निशिदिन श्वास श्वास से मधुर नाम ॥
घट घट व्यापक अन्तर्यामी ।
रोम रोम में रमता स्वामी ।
निर्विकार निर्वैर निरंजन ।
पाप ताप नाशक दुख भंजन ।
जपते सदा उसे योगी जन ।
पुनः पुनः कर उसे प्रणाम ॥
नित्य पवित्र सृष्टि का कर्त्ता ।
दुख दारिद्र्य मनोमल हर्ता ।
अजर अमर अविनाशी अक्षर ।
करुणा सिन्धु अनन्त कृपाकर ।

१. अमीचन्द का पूर्व नाम ।

मंगलदायक शान्त सुधाकर [१] ।
भज ले रे मन आठ याम [२] ॥
अन्न धान्य सब देने हारा ।
मुक्ति मुक्ति का है भंडारा ।
बुद्धि पाप-नाशक प्रभु दे नित ।
अमीचन्द ! प्रभु पूर्ण करे नित ।
सकल मनोरथ सर्व काम ॥

( ६ )

राग भैरव—ताल स्वर फ़ाख़्ता ।

कर उपासना प्रेम भक्ति से ।
हे उपास्य! गाऊं तव गीत ॥
करो मुझे सुतवत् [३] आलिंगन ।
जैसे पिता पुत्र की रीति ॥
द्विगुण[४] चतुर्गुण[५] अधिक दिनो दिन ।
रहे सदा बढ़ती तव प्रीति ॥
अमीचन्द के तुम प्रभु! नायक[६] ।
तुम्हीं सहायक औ' तुम मीत[७] ॥

---

१. अमृत करने वाला । २. पहर । ३. बेटे की तरह ।
४. दुगनी । ५. चौगनी । ६. रास्ता दिखाने वाले । ७. मित्र ।

( ७ )

जैजैवन्ती—ताल झप ।

नमः सृष्टि कर्ता नमस्ते नियन्ता[१] ।
नमः कष्ट हर्ता नमः पाप नाशी ॥
नमो दुःख भंजन नमस्ते निरंजन[२] ।
नमः सच्चिदानन्द निर्मल प्रकाशी ॥
अविद्या करो नष्ट सारे जगत् की ।
विमल ज्ञान फैले, कटे भ्रान्ति फाँसी ॥
अमीचन्द की बात स्वीकार कीजे ।
करे प्रार्थना दीन भारत निवासी ॥

( ८ )

रागिणी आसा—ताल रूपक ।

सखियो ! प्राणनाथ से कहियो,
जो देखी मम चित-अभिलाषा ।
निशिदिन दर्शन को तरसूं मैं,
विना वारि[३] ज्यों चातक[४] प्यासा ॥
विना कान्त[५] सब लगता फीका,
भूषण छादन मलमल खासा ।

---

१· नियम में रखने वाला । २· दुःख मल रहित ।३· जल ।
४· पपीहा । ५· प्यारा ।

क्षमा करो अपराध प्रभो ! मम,
दो चरणों में अपने वासा ।
धन्य सुहागिन अति बड़ भागिन,
करे पूर्ण जिसकी प्रभु आशा ॥

( ९ )

भैरवी—ताल रूपक

नैया कैसे उतरे पार ? ॥ टेक ॥
वार न दीखे पार न सूझे,
आन पड़ी मँझधार ॥
बिजली चमके बादल गरजे,
उलटी चले बयार[१] ॥
गहरी नदिया नाव पुरानी,
खेवट अति मतवार[२] ॥
द्रुपदसुता वत्[३] सुने न कोई,
मेरी कूक पुकार ॥
वेगवती दुस्तर[४] जलधारा,

१. हवा
२. मतवाले, मस्त.
३. द्रौपदी की भांति.
४. जिस से तरना कठिन है.

उठी तरंग अपार ॥
जिन हाथों से सब जग थामा,
सो प्रभु! हाथ पसार ॥
अमीचन्द की तारो नौका,
डूब रही मँझधार ॥

( १० )

भैरवी—ताल झप

नमस्ते पितः पूर्ण आनन्द दाता ।
नमः सृष्टि कर्ता नमस्ते विधाता ॥
अहो सूक्ष्मसे सूक्ष्म औ' स्थूल[1] इतना ।
कि ब्रह्माण्ड सारा उसी में समाता ॥
करो शुद्ध निर्मल हृदय नाथ! मेरा ।
करूं मैं विनय नित्य सायं व प्रातः ॥
मिटाओ प्रभो! चक्र आवागमन का ।
फिरूं जन्म पा पा न यों विलविलाता ॥
विना आपके कौन है दीनबन्धो! ।
जिसे मैं अवस्था हृदय की सुनाता ॥
अमीरस पिलाओ कृपाकान्त![2] मुझको ।
रहूं सर्वदा आप के गीत गाता ॥

१. महान् । २. कृपा के कारण प्यारे ।

( ११ )

रागिणी देशकार—ताल झप

तुम हो प्रभो ! चांद मैं हूं चकोरा ।
तुमहो कमल फूल मैं भक्त भँवरा ॥
हूं ज्योति का मैं तुम्हारी पतंगा ।
तुम शान्ति-घन[१] मैं विकल[२] वन्य[३] मोरा[४] ॥
पानी विना ज्यों न हो मीन को कल ।
तड़फाय यों नाथ ! तेरा विछोहा[५] ॥
हूं बूंद जल हेत[६] प्यासा पपीहा ।
कर स्वाति-वर्षा[७], हरो ताप मेरा ॥

( १२ )

रागिणी पीलो-ताल तीन

तुम्हें छोड़ किस द्वारे जाऊं ?
व्यथा[८] हृदय की किसे सुनाऊं ?
हम अनजान अयाने बालक ।
तुम स्वामी रक्षक प्रतिपालक ॥

---

१. शान्ति का बादल २. व्याकुल ३. बन का ४. मोर ५. वियोग, जुदाई ६. के लिये ७. पपीहा स्वाति-नक्षत्र ही में बरसी हुई बूंद का पान करता है, यह कवि सम्प्रदाय है। ८. दुःख

आन पड़े हैं शरण तुम्हारी।
जन्म मरण का संकट भारी॥
विनय करें प्रतिदिन उठ प्रातः।
सुत वत कंठ लगाओ ताता[१]॥
तुम मंगलमय मंगल दाता।
तुम हो मात पिता औ' भ्राता॥
अर्थ-चतुष्टय[२] हमको दीजै।
दर दर का नहिँ भिक्षुक कीजै॥

( १३ )

रागिणी सिंध काफ़ी—ताल धमार

साखि! मैं प्रिय सँग खेलूं फाग॥ टेक॥
जिसकी खिली सकल फुलवाड़ी।
वन उपवन औ' बाग॥
देख देख प्रभु-चरित मनोहर।
उपजे मन अनुराग[३]॥
जिसके मंदिर ज्योत जगावें।
चन्द्र सूर्य औ' आग॥
जिस के बजते अनहत[४] बाजे।

१. पिता। २. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—यह चार मानुष जीवन के फल। ३. भक्ति, प्रेम। ४. वह ध्वनि जो योगी ही सुनते हैं।

भाँत भाँत के राग ॥
अमीचन्द खेलो वह होली ।
जिस से हो बड़ भाग ॥

( १४ )

रागिणी सोहनी—ताल रूपक

[१]त्राहि त्राहि रखले करुणाकर !
त्राहि त्राहि रखले ॥ टेक ॥
सुत दारा सब सुख के साथी ।
भागें विपद पड़े ॥
माला लकड़ी ठाकुर पत्थर ।
कौन सहाय करे ॥
भिक्षा मांगूं केवल तुम से ।
तुम विन और न दे ॥
कष्ट क्लेश नहिँ उसे सताए ।
जो तव नाम जपे ॥
दास जानकर करिए पालन ।
हैं तव भले बुरे ॥
अमीचन्द विनती चरणों में ।
कर जुग[२] जोड़ करे ॥

१. बचाओ । २. दोनो हाथ ।

( १५ )

राग भैरव—ताल धमार

करूं आप के नाम का नित्य जाप ।
सिखाओ प्रभो ! ध्यान की रीति आप ॥
सुशिक्षित करो नाथ ! हम बालकों को ।
कि हम बाल अनजान तुम विज्ञ[1] बाप ॥
तुम्हारी कृपा की नहीं देव ! सीमा ।
दया का तुम्हारी नहीं तोल माप ॥
मिटे ताप तन का, हटे मैल मन की ।
मिटाओ मिटाओ प्रभो ! तीन ताप ॥
बता दीजिये प्रीति की रीति हमको ।
कि जिस से हमें हो तुम्हारा मिलाप ॥
रहे ध्यान गोचर सुशिक्षा तुम्हारी ।
कभी भूल कर भी न कर पायँ पाप ॥
वहां क्यों निरन्तर न बरसे अमी रस ।
जहां ओम् का हो मनोहर अलाप ॥

( १६ )

रागिणी आसावरी—ताल रूपक

दया करो प्रभु अन्तर्यामी ।

---

१. ज्ञानी ।

रहे न कोई कपटी कामी ॥
त्याग नाथ ! तव नाम मनोहर ।
हों न कदापि विषय-अनुगामी[१] ॥
पाप ताप[२] से हूं अति पीड़ित ।
मम पीड़ा थमती नहिँ थामी ॥
होय हताश[३] निराश जगत से ।
आया शरण तुम्हारी स्वामी ! ॥

( १७ )

रागिणी मध्यमात सारंग—ताल रूपक

मैं उन की छबि[४] की प्यासी ॥ टेक ॥
जिनका ऋषि मुनि ध्यान धरें नित,
योगी योगाभ्यासी ॥
जिनको कहते अजर[५] अशोकी ।
आश्रय जिनके सदा त्रिलोकी ।
जन्म मरण से रहित सदा शिव ।
काल-मुक्त अविनाशी ॥
आविष्कर्ता[६] अमर वेद का ।

---

१. विषयों के पीछे जाने वाले । २. पाप का दुःख । ३. जिस की आशा मर चुकी हो । ४. मुखड़ा । दर्शन । ५. बुड्ढा न होने वाला । ६ प्रकट करने वाला ।

९२४४ ६२/६२ १/४ १४.४.२८ ३५.१२८



लेश न उस में भेद छेद का।
अचल अमूर्त अलौकिक अनुपम[1]।
परिभू[2] विश्व निवासी ॥
अतुल राज्य है जिसका जग पर।
सकल सृष्टि है जिस के अन्तर।
अमीचन्द जिस से होते हैं।
रवि[3] शशि[4] अग्नि प्रकाशी ॥

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय

( १८ )

राग भैरव—ताल गात

क्यों पड़ी है स्वप्न में ? लख भोर[5] निद्रा त्याग री।
सास ननदें हैं जगाती जागरी तू जाग री ॥
स्नान कर उठ धार अंबर कर सिँगार लगा सुगन्ध।
प्रभु रिझें जिस भाँति से उस भाँति कर अनुराग री॥
कर सफल यौवन न खो दुर्लभ समय आलस्य में।
फिर अमीरस वृष्टि कब हो चार दिन का फाग री ॥

( १९ )

रागिणी जोगिया, धीमा तीन ताल

जो हरि गीत प्रीति से गाए

---

१. जिस जैसा कोई नहीं। २. सर्व व्यापक। ३. सूर्य। ४. चन्द्र। ५. प्रातःकाल को देख कर।

तिस के शोक निकट नहिँ आए ॥
सुधासरस[१] तव चरित मनोहर ।
मन का ताप बुझाए ॥
हे प्रभु हम अत्यन्त दुखी हो ।
तव चरणों में आए ॥
मंगल दाता, प्रेम प्रदाता ।
तू ने नाम धराए ॥
मांग रहे द्वारे पर याचक ।
फिर क्यों देर लगाए ॥
विषयों से उपराम रहे नित ।
भक्ति हृदय में छाए ॥
वेद शास्त्र का पाठ अमी चँद ।
संशय सकल मिटाए ॥

( २० )

रागिणी गान्धारी—ताल रूपक

उदय हुआ फिर भानु[२] देश में,
उदय हुआ फिर भान ।
प्रकट हुआ जब सूर्य ज्ञान का,
मिटा तिमिर[३] अज्ञान ॥

१. अमृत के समान रसीला । २. सूर्य ३. अन्धकार ।

नगर नगर औ' ग्राम २ में,
घर घर खुले समाज।
घोर नींद से आय जगाने,
हितकारी विद्वान्॥
यावन भाषा यवन देश फिर,
गई अनादृत होय।
लगी आर्य भाषा का करने,
मान आर्य सन्तान॥
देश भक्त औ' देश हितैषी,
प्राज्ञ पुरुष मतिमान्।
देशोन्नति पर मधुर मनोहर,
देते हैं व्याख्यान॥
स्त्री शिक्षा फिर लगी फैलने,
जगे देश के भाग।
विधवाएं फिर मानित होतीं,
आत्म कृत्य[1] को जान॥
पढ़ो वेद उप वेद सभी तुम,
करो अविद्या नाश।
कर लो सत्य झूठ का निर्णय,

१. अपना कर्तव्य।

छोड़ दंभ अभिमान ॥
अमीचन्द विद्वान् सुशिक्षित,
पण्डित चतुर सुजान ।
त्यागें लोभ करें सत् भाषण,
लें सहार धन-हान ॥

( )

रागिणी विभास—ताल स्वर फाख़्ता

उठ री बाले ! अब तो जाग ।
भोर[1] भई है, निद्रा त्याग ॥
उठ री सजनी ! बीती रजनी[2] ।
बोल रहीं चिड़ियां औ' काग ॥
निकलीं किरणें, सुरजन[3] जागे ।
जाग उठा तव सुप्त सुहाग[4] ॥
प्रातःकाल भजन कर प्रभु का ।
जिस से हो प्रिय से अनुराग ॥

( २२ )

रागिणी आसावरी—ताल रूपक

जप जप प्रभु प्रियतम मन मेरे ।
पाप कटें सब तेरे ॥

१. प्रातःकाल । २. रात । ३. देव गण विद्वान् लोग । ४. सोया हुआ सौभाग्य ।

जाप दान औ' स्नान निरर्थक।
यदि मन प्रीति न तेरे॥
जात पात की बात न पूछें।
पूछें काज भले रे॥
सत्य त्याग मिथ्या जो पकड़े।
वे अति दुःख सहेड़े॥
एक मात्र जो प्रभु को ध्यावे।
हम उस के हैं चेरे॥

( २३ )

रागिणी विहाग—ताल रूपक

यह मन कब समझेगा बौंरा।
कब समझेगा बौंरा, बौंरा
मन कब समझेगा॥ टेक॥
विषय भोग की मृगतृष्णा[1] में।
फिरता इत उत दौड़ा॥
प्रणव[2] फूल की रस लेने को।
बनता क्यों नहिँ भौंरा॥
स्थान पराया अपना जाने।

१. वह धूप में पड़ी रेत की चादर जो जल सी प्रतीत होती है और प्यासा मृग भ्रान्ति का मारा उस के पीछे दौड़ता है पर वह हाथ नहीं आती। २. ओम्।

भूल गया निज ठौरा[१] ॥
अमीचन्द ! माने नहिँ बेढब ।
मुग्ध गँवार निगौड़ा ॥

( २४ )

रागिणी वागेश्वरी–ताल रूपक

क्यों शोकातुर[२] से बैठे हो,
मन शुद्ध करो प्रिय! यक क्षण को ।
सब चिन्ता मन की दूर करो,
क्यों करते ध्यान विषय धन को ॥
परित्राण हतु[३] यदि व्याकुल हो,
यदि आकुल हो प्रभु दर्शन को ।
प्रभु पूजा में अनुराग करो,
औ' प्रस्तुत[४] हो प्रभु कीर्तन को ॥
शुभ भक्ति प्रेम के फूलों से ।
भरपूर करो हिय [५]नन का ॥
एकान्त सुधारस [६]न करो,
औ' शान्त करो अपने मन को ॥

---

१. स्थान । २ शोक से व्याकुल । ३. बचाने के लिए ।
४. तयार । ५. हृदय के उपवन को । ६. अमृत रस ।

( २५ )

राग मालकौंस—ताल स्वर फाख़्ता

मन मतवारा[1] इन्द्रिय दश में।
इन्द्रिय हैं विषयों के वश में॥
कान मुग्ध रस में शब्दों क।
नेत्र रूप के जकड़े रस में॥
बँधा गन्ध से है घ्राणेन्द्रिय।
त्वचा फँसी है स्पर्श सरस में।
भान्ति भान्ति के भोज भक्ष्य कर।
रसना उलझ रही षट् रस में॥
इस बन्धन से छुटकारा हो।
प्रभो! करो मम चित निज वशमें॥

( २६ )

रागिणी कानड़ा—ताल स्वर फाख़्ता

इस नगरी के नौ दरवाज़े।
दसवां गुप्त हृदय का द्वार॥
अन्दर इसके हैं अति सुन्दर।
अन्तःकरण चार बाज़ार॥
पहला मन द्वितीय है बुद्धि।
चित तृतीय चौथा अहंकार॥

---

१. मस्त।

मन मंडी में तुलता सौदा ।
जो जिसको होवे दरकार ॥
करो बुद्धि से वस्तु परीक्षा ।
सार-पूर्ण है या निस्सार ॥
दस इन्द्रिय इस में सौदागर ।
करते सदा वनिज व्योपार ॥
इस नगरी में पांच उचक्के ।
करते जातों का संहार ॥
अमीचन्द निज वित्त बचाओ ।
रहियो रैन दिवस हुशियार ॥

( २७ )

रागिणी विभास-ताल रूपक

तू कुछ कर उपकार जगत् में ।
तू कुछ कर उपकार ॥ टेक ॥
कर्म उपासन ज्ञान भेद से ।
कर्म अकर्म विचार ॥
मिलते हैं सुख दुःख जगत् में ।
पूर्व कर्म अनुसार ॥
कर सुकर्म रूपी धन संचय[१] ।

१. इकट्ठा ।

यही वस्तु है सार ॥
देशोन्नति गुरुगण[1] की सेवा ।
कर गुणिगण सत्कार ॥
भूखे प्यासे को जल भोजन ।
दीजे यथाधिकार ॥
मृत्यु समय में होंगे साथी ।
तेरे श्रेष्ठा चार ॥
इन का संग्रह कर ले जिस से
हो सुख सर्व प्रकार ॥
कहे ब्रह्म, अल्पज्ञ आपको ।
तिस को है धिक्कार ॥
अमी चन्द! है कृत्य कर्म वह ।
वेद कहें जो चार ॥

( २८ )

रागिणी विहाग-ताल रूपक

जिस गाड़ी में जाना तुझ को,
यक पल क्षण में आती है ।
कुछ देर नहीं बांधो विस्तर,
घंटी उपदेश सुनाती है ॥

---

१. बड़ों की ।

करे शंट इंजन गरजे है,
सुन सुन हिय थर थर लरजे है ।
हम छोड़ वतन उस देश चले,
जिस से आती नहिँ पाती[1] है ॥

( २९ )

## विवाह गीत ।

राग बिलावल-ताल रूपक

बनरा बनरी ब्याहन आया ॥ टेक ॥
धन्य भाग्य लाडली वधू के ।
सुघड़ चतुर वर पाया ॥
मूर्ति मोहिनी सौम्य सोहनी ।
रूप रंग मन भाया ॥
अमी चन्द चिरजीवी जोड़ी ।
विधि ने जोड़ बनाया ॥

( ३० )

## वरपूजा के समय गाने का गीत ।

रागिणी गान्धारी—ताल रूपक

देव वधू ऐसी बन आई ।
जिसकी छवि वर्णी नहिँ जाई ॥

---

१. पत्र ।

गज गमनी[१] कटि[२] केहरि रमणी[३] ।
शोभित मुख द्युति शशि की न्याइ[४] ॥
मृग[५] नयनी[६] कोकिल पिक बैनी ।
दर्पण[७] देख देख मुसकाँई ॥
अमी चन्द बन सँवर सुहागिन ।
वधू देव पूजा को आई ॥

---

१. हाथी की चाल वाली । २. कमर । ३. शेर की कमरकी तरह रमणीय । ४. मुख की ज्योति चन्द्र की तरह सुन्दर है । ५. मृग की सी आंखों वाली । ६. कोकिल की सी आवाज़ वाली । ७. शीशा ।

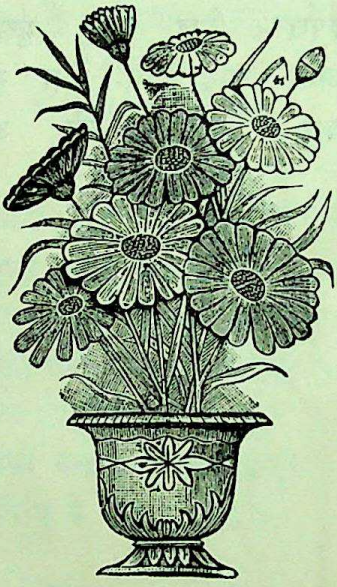

# पंजाबी भजन

भूमिका।

पंजाबी भक्तवर अमी चन्द की अपनी भाषा है। उस पर उनका विशेष अधिकार है। उनके उर्दू अक्षरों में छपाए हुए "संगीत सागर" में केवल ४ पंजाबी के भजन मिलते हैं— जो हमने ज्यों के त्यों यहां उद्धृत कर दिए हैं। एक स्थान पर

शेर वूटे २ काहीं ।

था। पंजाबी जानने वालों के परामर्श से हम ने उसे

सप्प वूटे २ काहीं

कर दिया है।

हम पंजाबी के परखिए नहीं। तो भी हमें अमी चन्द की पंजाबी में विशेष आनन्द आया है। इन ४ भजनों में दो भाव दर्शाए गए हैं। एक जगह कवि बटोही बनता है। उसे बहुत दूर की यात्रा करनी है। यात्रा संकट-संकीर्ण है। बड़े मर्म-भेदी शब्दों में 'साईं' से पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना की है। मार्ग में पग २ पर सहायता चाही है। सारा दृश्य जीवन यात्रा पर पूरा घटता है। दूसरा रूप है नई वधू का। वह ससुराल जा रही है। पंजाबी प्रथा के अनुसार डोली लाई गई है और उसे यात्रा के लिए

तयार कर दिया गया है। वधू का हृदय छोटा हो रहा है। उसका खेल का सामान, उसकी सखी सहेलियां, उसके सगे संबन्धी, सभी पीछे रह जायंगे। यह वधू कौन है? जीवात्मा। स्वयं वेद में आया है कि जीव परमात्मा को ऐसा भजे जैसे—

मर्यं न योषा

स्त्री अपने पति को भजती है। अमी चन्द एक जगह कहते हैं:—

कन्त सुचज्ञा ते मैं हां कुचज्ञी।

वहां 'कन्त' परमात्मा ही तो हैं। कवियों ने मरने को भी एक प्रकार का विवाह बना दिया है। इस में स्वारस्य क्या है? रसिक लोग जानते हैं।

मृत्यु समय मोह होना स्वाभाविक है ही-साधारण लोगों के लिए, महात्माओं के लिए नहीं। गाने और पढ़ने वालों के लिए यह भाव वैराग्य की सामग्री है। रहा वधू का वर के साथ जाते हुए रोना। इस के लिए संस्कार विधि तक में गुंजाइश रखी है, जहां वधू के आश्वासन के मन्त्र तक दिए हैं। कुछ हो इस वधू रुदन में एक रस है। सियानी बहुएं नहीं रोतीं, परन्तु संसार में सियानी बहुएं हैं कितनी?

संपादक

( १ )

रागिणी पहाड़ी—ताल धमार

वतन दुराडा साडा, देस दुराडा,
पइयां अवलड़े राहीं ,
साईं ! सानूं तोड़ पुचाईं ॥ १ ॥
टुरी हां कुवेले, विच उजड़े बेले,
साथ न बेली वाहीं,
साईं ! साडा साथ निभाईं ॥ २ ॥
पैर अगेड़े मैं डरदी न धरदी,
सप्प बूटे बूटे काहीं,
साईं ! करीं दूर बलाईं ॥ ३ ॥
झलां विच झालियां, मैं दम सूलां सलियां,
होगए पैर अजाईं,

साईं ! किथे पैर टिकाईं ॥ ४ ॥
थक थक हारी, सिरते भार है भारी,
पई मैं अवलड़े राहीं,
साईं ! सानूं राह बताईं ॥ ५ ॥
खुबियां मैं खुबियां, चिक्कड़ विच डुबियां,
फसियां आन कुथाईं,
साईं जावां किस थाईं ॥ ६ ॥
रात अँधेरी, लभदा तुला न बेड़ी,
नदियां वगिन असगाईं,
साईं ! सानू पार लगाईं ॥ ७ ॥
खाली मेरा पल्ला, हत्थे छाप न छल्ला,
मसलिए मँगदे मलाहीं,
साईं ! साडा पलड़ा छुड़ाईं ॥ ८ ॥
बुरी हां या भली हां, मैं दर उत्ते खली हां,
आन डठी हां पनाहीं,
साईं ! नित दा पैंडा मुकाईं ॥ ९ ॥
तेरे दर मँगदे अमीर न सँगदे,
मेरी भी आस पुजाईं।
साईं सानूं वतन पुचाईं ॥ १० ॥

( २ )

रागिणी शुद्ध तोडी-ताल रूपक

मैं जिदँ जान तुसां थीं घोली,
सैयो बाबल जाइयो नी भरजाइयो।
रखलौ अज कोई डोली ॥ १ ॥
कई वा दे वग्गे वरोले,
सांभ न सकियां मैं गुडियां पटोले।
खेडन थीं अजे चा नहिँ लथड़ा,
पिया विछोड़ा झोली ॥ २ ॥
जांजियां कीते तुरत तयारे,
पा टलियां गल उट्ट सिँगारे।
सुण सुण कूच दे ढोल नगारे,
होइयां डावां डोली ॥ ३ ॥
पैर डोली विच मूल न धरसां,
सयो तुसांथीं विछड़ी मरसां।
दम दम याद तुसानूं करसां,
किधर गई मेरी टोली ॥ ४ ॥
डोली पकिड़ विठाई भाइयां,
मिलन न दितियां चाचियां ताइयां।
अँवड़ी नाल मैं विदा न होई,

बाबल नाल न बोली ॥ ५ ॥
डोली चाई चौंह कहारां,
रोवां कूकां हाई मारां।
माथियों घड़ी सिंदूर उतारां,
गल थीं लहवां मौली ॥ ६ ॥
गुथियां लुटियां शहर गराइयां,
अमिँचद बाह्मणां लागियां नाइयां।
सब सखतियां मेरे सिर आइयां,
की जाणां मैं भोली ॥ ७ ॥

( ३ )

रागिणी आसा—ताल रूपक।

प्रभु लै लै नाम तेरा,
मैं देआं चरखे नूं फेरा।
तुध चरखा भेरा घड़िया,
मैं तां तेरा लड़ फाड़िया ॥ १ ॥
चरखे दी कीमत भारी,
मैं न दे सकां बिचारी।
अनमोल जीभ दी चमड़ी,
मैं मुल्ल न पाया दमडा ॥ २ ॥
मैं कतनियां चाई चाई,

तकले विच वल्ल न पाईं ।
मेरा फिरे न मनका भौंरी,
मेरी अकल न होवे बौंरी ॥ ३ ॥

मेरी बाहड़ माह्ल न भड़के,
मैं कतनियां उठ तड़के ।
घड़ दे कारीगरा ! पीढ़ी,
जेढ़ी सुख दी होवे सीढ़ी ॥ ४ ॥

कोई पक्की लकड़ी लाईं,
उत्ते गूढ़ा रंग चढ़ाईं ।
रँग चाढ़ीं तू दिल देके,
खुश होवन सौह्रे पेके ॥ ५ ॥

सइयां देख के होवन राजी,
ओह मेरी करन मुथाजी ।
मैं पहिली पूणी लाही,
सौह्रे घरों आया नाई ॥ ६ ॥

मेरे नाल दियां जो सैयां ।
उन्हां कत्त पछियां भर लइयां ।
एह चरखा होया पुराणा ।
करे अमिचँद काहदा माणा ॥ ७ ॥

( ४ )

रागिणी आसा—ताल धमार ।

की कण दाज रँगावां ?
सइयो नी मैं मूल न कतिया ।।टेक।।
नहिं सां मैं भुक्खी नहिं सां मैं नंगी,
पर नहिं चोली चुन्नी रंगी ।
हुण बैठी शर मावां,
सइयो नी मैं मूल न कतिया ।।१।।
पिछला कतिया क ढ हँडाया,
अगले कतने नूँ हत्थ न लाया ।
हुण बैठी पछतावां,
सइयो नी मैं मूल न कतिया ।।२।।
अमिचन्द ब्राह्मण लैण नूँ आया,
रोण लगा मेरा मा प्यू ताया ।
की कण सौह्रे जावां,
सइयो नी मैं मूल न कतिया ।।३।।
कन्त सुचज्जा ते मैं हां कुचज्जी,
उस दे कजियां मैं जासां कज्जी ।
जे कन्ते मन भावां,
सइयो नी मैं मूल न कतिया । ४।।

**आत्मदर्शन** --आर्यभाषा के साहित्य में यह अपने ढंगका एक अपूर्व पुस्तक है जो श्रीनारायण स्वामीजी (भूतपूर्व महात्मा नारायण प्रसादजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन) ने वर्षों के स्वाध्याय के पश्चात् वानप्रस्थ आश्रम में लिखा है। संसार के भिन्न २ मतों में-फिलासफी दर्शनों तथा साइन्स में-आज तक आत्मा के विषय में जितनी भी थियोरियें (कल्पना) निकली हैं उन सब पर इस पुस्तक में विचार किया गया है। वैदिक सिद्धान्तों पर सुन्दर रीति से विवेचन किया गया है। इस पुस्तक का स्वाध्याय प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिये आवश्यक है, कोई भी आर्य परिवार इससे खाली नहीं रहना चाहिये। हिन्दी में तो क्या किसी दूसरी भाषा में भी ऐसी up to d te पुस्तक मिलनी कठिन है। पुस्तक बढ़िया कागज पर बहुत सुन्दर छपी है। इस की भूमिका पं० धर्मेन्द्रनाथजी बी० ऐ० सम्पादक आर्य मित्र ने लिखी है, बड़े २ सन्यासी महात्माओं और विद्वानों ने इस पुस्तक की दिल खोलकर प्रशंसा की है। पृष्ठ संख्या ४००

मूल्य १॥) सजिल्द २।)

**भारत का प्राचीन इतिहास**-(पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी द्वारा लिखित) यह इतिहास लाला जी की वर्षों की मेहनत का फल है वह बहुत देर से एक ऐसे इतिहास की आवश्यकता अनुभव कर रहे थे जो भारतवासियों में अपनी प्राचीन सभ्यता के लिए गौरव पैदा कर सके परन्तु देश सेवा के अनेक कार्यों से वह इस अत्यन्त आवश्यक कार्य को न कर सके। अब कारावास में सैकड़ों पुस्तकों के अवलोकन के पश्चात् वह इस योग्य हुए हैं कि इतिहास को पूर्ण कर सकें। भारत के किसी भी नर नारी को इस के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिए।

मूल्य २। सजिल्द २॥।)

R78,CHA-A
35137

# स्वाध्याय के लिये नई पुस्तकें।

प्राणायाम विधि—श्रीनारायण स्वामीजी ने वर्षों के अनुभव के बाद लिखी है। पुस्तक में प्राणायाम की विधि और लाभ लिख हैं =)

अमीरस सार—पं० चमूपतिजी ने भक्त अमीचन्द के भजनों को संशोधित करके छपवाय. है। ≡)

भजनामृत—आर्य्यसमाजों केलिये अत्यन्त उपयोगी भजन॥)

हमारे स्वामी—बच्चों के लिये स्वामी दयानन्द का सचित्र जीवन-चरित्र। लेखक-पं० चमूपतिजी। मूल्य ।=)

सूक्ति सुधा—आर्य्य समाज के एक प्रसिद्ध स्वामीजी ने बच्चों और संस्कृत सीखने वालों के लिये वेद की सूक्तियों का अर्थ सहित संग्रह किया है। मूल्य =)

कृष्ण सुदामा—हिन्दी में सचित्र भगवान् कृष्ण और सुदामा की आदर्श मित्रता का दृश्य दिखलाया गया है। मू० ॥)

भक्ति मार्ग की पुस्तकें—भक्ति दर्पण ॥) सत्योपदेश-माला १), आनन्द संग्रह १); संध्या रहस्य ।=) संध्या योग ।): आत्मदर्शन १॥); ओंकारोपासना ≡); ईषोपनिषद् का स्वाध्याय ॥=); कल्याण मार्ग ≡); गीता ॥); सत्संग गुटका =)।

भाई परमानन्दजी की पुस्तकें—गातामृत १॥); देश-पूजा १॥); आपवीती १॥) वीर वैरागी ॥=); भारत संदेश ॥): हिन्दू संगठन और आर्य समाज। इसके अतिरिक्ति वैदिक धर्म सम्बन्धी सब पुस्तकें यहां से मिल सकती हैं।

**राजपाल—मैनेजर**

आर्य पुस्तकालय, सरस्वती आश्रम, अनारकली लाहौर।

६८
६१

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

१००००.६.५६। ३५,१३६

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।